

ह. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

४४४ (५०५)

ग्रंथ नाव

ब्रह्मरखड

विषय

क. पुराणे

म. न. ६

मराठी

रघुकविक्रम सोनखंड

क-हाड देवा

म. न. ६ ४७०१५ ४४



७-७

॥ प्रसंग  
९

(१)

श्रीब्रह्मोत्तरवड प्रसंगा ॥१॥

प्रसंगा  
९



(2)

श्रीराम

१

६

श्रीब्रह्मोत्तरवेड प्रारंभ ॥ प्रसंगप्रथम ॥  
राके १६६३ दुर्मतिसंवलार फाल्गुण वद्यद्वि ॥  
तिस्सगुरुवारी ॥ हस्तारामाजगावी प्रारंभ ॥  
दृष्टांतीर युग्म कोषी ॥ मीपचौफळराम ॥

श्री

१

प्रसंग ॥ १॥

(2A)

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीसरस्वत्यैनमः॥ श्रीगुरुभ्योनमः॥ श्रीभवानि  
शंकरायनमः॥ निर्विघ्नमस्तु॥ अथ नमो चिन्मात्रस्वरूपा॥ जिनिर्मल  
ज्ञानरूपा॥ अज्ञानतमहरणदीपा॥ निस्यानंदादिवात्सल्यजनमो॥ १॥  
समस्तगुणवृत्तिसाक्षी॥ लक्ष्मीनां नयसि लक्ष्मी॥ देशीदीप्तिज्ञानच  
क्षी॥ तया शंकरानमोजी॥ २॥ आईका शंकरनाममहीमा॥ जेउंचा  
रितांही अथमा॥ पवित्रकरी शीववरनामा॥ जेनिजधामा करणेन॥  
नितपण होता विष्णुपर॥ पुनरितानिकदी जवर॥ हनगतिपरि  
स्मितास्तविस्तर॥ सुररिपुचरित्रमहिमा॥ ३॥ तरिस्पदशिवआ  
ख्यान॥ आईकावे सुष्यपावन॥ याळगिमनाचेकांन॥ परिसा  
यया सरसावळे॥ ४॥ शीवचरित्रसविस्तर॥ शिवभक्तांचा मही  
मा प्रकार॥ नाममाहत्मभजननिधोर॥ प्रजादिविधसर्वही॥ ५॥

सागों

वें

आइकोनि प्रेमनिर्मर ॥ सुताचें सुरवी जालें अंतर ॥ स्नणे मळा केला  
घुस्नादर ॥ श्रवणात वरदा तुनी ॥ ७ ॥ विस्तारे स्नणे लब्ध्या महीमा  
तरी मतिने न पुरे लब्ध ॥ नथोपि सांगे यथामतिने तुम्हा ॥ टी  
वचरणें स्मरोनि ॥ ८ ॥ तथामतिने श्रेष्ठ काशी ॥ देवामाजी पुर  
दे शि ॥ तैसा मंत्रामा निवि हो शि ॥ शिवपंचाक्षरि मंत्र ॥ ९ ॥ न ल  
गे शुचि तपासन ॥ न लगे यासि वेष्टि विधान ॥ केवल्य पद  
अथमाळगेन ॥ वर्षावण निवि शरी ॥ १० ॥ नमः ऐसा जो उ  
च्चार ॥ तो जीवपद स्थानि साचार ॥ शिव अक्षर सपें शंकर ॥  
परमात्मा बोली जे ॥ ११ ॥ नमः शिवाय मंत्र ये सा ॥ केवल्य जीवनी  
हो च होय जे सा ॥ यालागी पागम्य महीमा शोभा ॥ परिसास  
विहीर की वर हो ॥ १२ ॥ संसार पाशी बांधले ॥ जे जन्म मरणे

(3)

२

श्री

॥ प्रसंग ॥ ११ ॥

(३५)

प्रमले ॥ याला गिकसणे नेहे निर्मिले ॥ च जसव पाश छेदक ॥ १७ ॥  
तवचि नरि संसारि ॥ प्रमति जंम मर पाहारी ॥ जं वरी घना ही पं  
चाक्षरी ॥ येक वेळ पे जाला ॥ १८ ॥ पुण्य क्षेत्रिं गुरु मुखें ॥ मंत्रो  
पदेश यथा सुखें ॥ जपि जे नरिय या निमित्थें ॥ महापात कें जळ  
तिल ॥ १९ ॥ अथवा पळतिये ठाई ॥ मंत्र जप दां दोश नाही ॥ श्री  
गुडा दिवर्षा पाही ॥ परम भक्ति दाता ॥ २० ॥ तरिये अर्थ पुरात  
न कथा सोगे न दुहाला गुन ॥ मथुरा नगरी दगार्ह अमिधान  
राजालक्षण वंत तो ॥ २१ ॥ सर्व गुणान्ना आगर ॥ विख्यात बळसा  
गर ॥ जाणे निविशा स्वचतुर ॥ परम उदार पराक्रमी ॥ २२ ॥ का  
शिराज तनया सती ॥ नामे विख्यात कळावति ॥ तिप्रणुनि यथा  
निगुनि ॥ आपणिलि अति मोह ह्मवे ॥ २३ ॥ गृह प्रवेशा लीनो  
वरी ॥ संभोग समई राजा पांचरी ॥ बोलतां न ये सुंदरी ॥ ना

प

(4)

३

नानोरीस्त्रि विताही॥ २०॥ पाचारितां प्रयत्नें करी॥ नये जवळी  
निज अंतुरी॥ राजा चालीला मदे करी॥ संमोगार्थ आणा व्या॥ २१॥  
करि धर पाहे नृपती॥ तंव ते बोले कळावती॥ सणे सीवसी प्राण  
पति॥ शिव वृत्ति निष्ठु से॥ २२॥ धर्म धर्म जाणत आससी॥ त  
तरि मातें अनिआत कसि॥ कारण जाणे निविशे श्री॥ सर्व ही  
विदित मज॥ २३॥ तरि परिसरा यावी नकी॥ दंपसा दोघा आ  
सा विप्रीती॥ तरि योगसुख दाति रखीती॥ विपरित वर्तति  
ते दुःख॥ २४॥ फुलाचे पंख नि तारस॥ चेळणिं करितां  
होय विरस॥ ऐसें म्हणत होती॥ धृष्टी रा॥ बळेचि बोहु  
नि आळंगी॥ २५॥ अंगा आग लागे जेवरी॥ तव राजा द  
ग्ध रासीरी॥ तापले लोहो हा पुरी॥ पोकी हा पुरी॥ साडुनि  
राजा डुरि ठके॥ २६॥ मये कापत सेच कचका॥ राजा म्ह

(५१)

णेनोहेआबळा॥अग्निसिखेचाउमाळा॥कायहेकळा॥ते  
नकळे॥२७॥कोंवळीकमळपत्रापरी॥सिनळषसाविहेनारी  
तसलोहचियेपरी॥कोंपाशरीरीहेदशा॥२८॥ऐसाभया  
चकीतस्यपती॥जाणोनिबोलेकळावती॥होसोनिमृणोजी  
नृपती॥हेसर्वविहीमनेंअसे॥२९॥बाळपणिमजमाहेरी  
दुर्वासरतीनिशीवपंचाक्षरी॥उपदेविलाहोताअंचरी॥  
यास्तवसर्वहीमिंजाणे॥३०॥यामंत्रसामर्थ्येकलन॥निः  
पाशरिरमासैमृणौन॥कुपुत्रानसीविवेमजलागुन॥  
कलराबंधनमजनाही॥३१॥रायाराजशरीरहेनुमचें॥  
संगघडलेकुलटांस्त्रियांचे॥श्रानादिकसुचित्वकैचें॥जाणा  
साचेंपापमुळ॥३२॥नाहिशीवपंचाक्षरी॥जपजपिलेतिवैख  
री॥शिवपुजनादिठेलेतिंदुरी॥राजविलासकरीतांदुही॥३३॥

(5)

४

बेदोराहृदयं तथा हेन॥ शरीरी तु मचेनादत॥ निःपाप तनु  
ने मंत्र युक्त॥ केविसिवो शक्रे पाप तनु॥ २४॥ कुलटां श्रीयाचं  
सेवन॥ निरुद्य उल्लंघनं दद्यात्॥ दोषि शरीरं तु मज्जला गुन॥ केवि  
सिवो शक्रे सिल॥ २५॥ धैको नमि ये च वचन॥ रायाचं विस्मित मन  
मायुता त्रियेला गुन॥ हृणेत रितो मंत्र उपदेष्टी॥ २६॥ पंचाक्षरी वि  
द्या मिलेपे॥ जबति लेशरी री लमापे॥ निःपाप होउ निवृज्य  
मुपे॥ संगे सुरवे भोगी न॥ विरेहणे भ्रतारा सी॥ स्त्री काय  
मंत्र उपदेसी॥ तुंगुत होउ विविपरित कैसी॥ वचने वद सी  
ता स्वरा॥ २७॥ तुमचा कुल गुन गौर्या॥ तया शरण शिषे  
जीव पवर्षी॥ लाहोन मंत्रोपदेश चर्या॥ सर्व कलम होना सावी॥  
२८॥ सुत हृणेतो निकाते॥ मित्र राया क्रमिं लिखात्री दे॥ स्प  
शन करितां कळावति दे॥ प्रभाते गेली यमुने तिरा॥ २९॥ ३०॥

(5A)

चरित्तमहाशरीरं

गर्गसिद्धीचा अश्रम ॥ श्रीसहितपावलानरोत्तम ॥ सुशीपदानमुनीउ  
पक्रम ॥ रात्रिचा प्रसंग निवेदीला ॥ ४१ ॥ वारंवार नमिति पायो ॥ श्री  
पुरुषेंतया मुनिराया ॥ कृतार्थकरीं मज्जामिया ॥ पंचाक्षरीउपदे  
शी ॥ ४२ ॥ जाणत नेणत राजशरीर ॥ पापें घडलें मज्जामिया ॥ तें म  
स्महेति जेणें प्रकारें ॥ तें मंत्र मज्जामिया ॥ ४३ ॥ जाणत नेणत राजश  
रीर ॥ पापें ॥ दीनदयाळ सत्त्व ॥ मज्जामिया ॥ दीनासुखी ठेविल ॥ सर्व  
भावे मित्रारणनिर्धात ॥ आलाप हें आदृष्टी ॥ ४४ ॥ आर्तवेंत कर  
णां भाकीती ॥ दोघें रावराणें वरीती ॥ जे कोनितो वदया मुनि ॥ इव ल  
चिती करुणेने ॥ ४५ ॥ मग येवो नित्य मुनेतीरा ॥ श्रानकर विलें नृपव  
रा ॥ तरत कीं बैसोनि पंचाक्षरा ॥ गर्गरायाउपदे विलें ॥ ४६ ॥ पुण्यस  
रिताजळीनाहाला ॥ वरि पंचाक्षरीउपदेशाला ॥ सीवध्यानें निधु  
त केला ॥ राजादोषापासुनी ॥ ४७ ॥ शीवध्यान आणि मंत्रोच्चार ॥

(6)

रुषिचामस्तकी लगतांकर॥ वायसनिवाले आपर॥ शरीरांतु  
निशानकोटी॥ ४८॥ कावकावकरितां दध्यजाळे॥ वायसव्यागणी  
तनिघेन पडिले॥ स्मोवते निघेन पडीले॥ नृपें देखीले॥ सर्वा  
गातुनि आमुलिया॥ ४९॥ राजाराणी विस्मिने॥ होठ निघुसति  
संदुसते॥ आश्वीये मोटे हें आमुते॥ राजदेहातें वायसका॥ ५०॥  
इतुके साटवले होते कोठे॥ जवळे गांहे आश्वीये मोटे॥ हे सां  
गावें संशय नुटे॥ जेणे कर निश्चय मिया॥ ५१॥ रुषिमुणे आनंत  
जंमें॥ जें लें संचित पाप॥ ते शरीरांत होतीली न धर्म॥ व्या  
पुनिया॥ ५२॥ आमंत्रराज उपदेश॥ मित्रुकीं जवळ येका निमिषें॥  
वायसरपें निघली कलत्रों॥ दोरा रहित देह जाला॥ ५३॥ कोटी  
ब्रम्हसा घडलीया॥ आगम्यागमन परस्त्रिया॥ सुवर्णचो  
रिसुरा पान जया॥ घडली माहापान के॥ ५४॥ ऋणुह सादि पा

(6A)

पातके॥ नया घडलिं व्यासति लब्धाने के॥ शीव पंचाक्षरी मंत्रे  
ये के॥ अस्मि श्रुत क्षणांत॥ ५५॥ तरि तु सिया देहा तु नि॥ पापे गे  
लीं मस्म होउनि॥ निपाप जा लासि सह कामीनी॥ विहार क  
रिं यथा सुखे॥ ५६॥ वे से सागे नि देवाते॥ नषि गेल नि जष  
श्रमाते॥ राजाराणी विस्मि न चीते॥ स्वग्रहांते पातली॥ ५७॥  
राजा व्याळंगी पति सी॥ तव ते रिनि वप क्षीणी वे सी॥ महान  
वल उभय वर्ग सी॥ यथा सुखे लिं कीउती॥ ५८॥ वे दोष प निष  
द पुराणे॥ सर्व शास्त्रांचे विहार॥ पंचाक्षर मंत्र हा कथना के  
ले दोहा सरिते॥ ५९॥ कलिक ज्ञानाशन॥ सीव नाम समथ  
गहन॥ जणां हर हां कर सरी मुषण॥ पावन नाम मोक्षदाती  
॥ ६०॥ नाम आधीं आधीं नासी॥ नाम तारक सर्व वर्ग सी॥ न  
म काम धे मुषका सी॥ जे सत्ता वे उच्चारिती॥ ६१॥ नाम तिथा

(७)  
करी पुनीत ॥ नाम सीवस्वरूपनिश्चरीनाते नाम जया चिया  
मुख्यां त ॥ तो प्रसक्त शीव जणां ॥ ६५ ॥ नाम मही मा अगाध  
थोर ॥ म्हणतां तरनि ते पा मर ॥ वर्णा वर्ण साचार ॥ नामि विच  
र न करावा ॥ ईश ॥ सुगम सोपे जणि ॥ सुख दाते ॥ नाम सर्व ही  
विश्व जनाते ॥ जप जपर सने ना से माते ॥ रघु कृपे भव नीधी व  
तरणार्थी ॥ ६६ ॥ ॥ हीत श्री स्व द पुराणे ॥ ब्रह्मेतर खंडे ॥  
राजा पापर हीत ॥ प्रथमोऽध्याय ॥ ११ ॥ सं पुर्ण मरुत ॥ ११ ॥



॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

॥ प्रसंग ॥ २ ॥

(7A)  
श्री गणेशाय नमः ॥ वेशो भवेन मः ॥ शंकर नमः वर्णने ॥ सुत पुराणीकाचे  
मने ॥ उल्लाह जाला कोटी गुणे ॥ वोळे घन जे विगगनी ॥ १ ॥ नया हारि  
खाचि पावडी ॥ लागली चढोवडी गोडी ॥ उभउ निस्वानंद चिगुडी  
रीवरात्र महीमा संगतु ॥ २ ॥ ऐका सेवरात्री महिमान ॥ होये माहापा  
पाचें दहन ॥ नीच ही पावे मुकी सदन ॥ चरित्र श्रवण सुख करहे ॥ ३ ॥  
सुत म्हणे पुढति पवित्र ॥ आर्या कसरी ॥ शिव चरित्र ॥ येकाग्र करति  
मन श्रोत्र ॥ परि साविचित्र कथहे ॥ ४ ॥ याचरी त्राहुनि पापनाशन ॥  
नदी सेवान भव मोचन ॥ सकल सुख कर सायन ॥ संसार रोग नि  
देळिते ॥ ५ ॥ सौभाग्य दिर्घायु विलस्य अरोग्य ॥ भक्ती मुक्ती त्या वया  
योग्य ॥ जरि व्यनंन्य भावाचें लाहे भाग्य ॥ आराधन तत्पर जे ॥ ६ ॥  
आरदे व्यथवा सुख सुख कलम हो ॥ सानि व्यथवा थोर व्यापे हो ॥  
नासावया हे समर्थ बासे ॥ राखिवरि ऐसे ने मिळे ॥ ७ ॥ इतर

(६)

१

जा

प्रायश्चित्तकरन॥ जेना सेना पाप गहन॥ तेना आराधने॥ वरु जे  
॥ ६ ॥ होय दहन॥ निश्चित मुनि जन बोलती॥ ८ ॥ सर्व शास्त्री नि  
श्चय केला॥ मोक्ष पदा सि पावा बयाला॥ ईश्वर पुजन विधि हाम  
ला॥ भावे करी ह्याला गुनी॥ ९ ॥ जाणे निपाथवाने गुनी॥ भले या  
येक मिसें करुनि॥ जे वापिले सिवाला गुनी॥ तेनी वाणी दे मुकी  
॥ १० ॥ ऐसें सर्व विसी सफळते॥ कवण हणाल पुजन ते॥ नरी सां  
गेन परिसा निश्चीते॥ बहु सुख दात विचित्र॥ ११ ॥ माघ मास दश  
चतुर्दशी॥ दुलभ उपवास दीवरी॥ सातही दुलभ विदोषी॥  
निसि ~~सि~~ गण सेवा पुढे॥ १२ ॥ शिवली गदषनि श्रेष्ठ॥ दुलभ  
सातही पुजा करीष्ट॥ कोटी जन्म पुण्य विहाष्ट॥ तरी बेल पत्र  
आपि जे॥ १३ ॥ दाहा सहस्र वरुषे वरी॥ गंगा स्नान घडे निरंत  
री॥ बेल पत्र आचन करी॥ येक वाईले ते समान॥ १४ ॥ ५१

षी

उनीवरा

(४A)

युगी युगी पुण्यदिवसी ॥ मांत हि दुल भविशेषी ॥ घडलिया जयान  
रासि ॥ सिरात्रिचे दिवस दीवसी ॥ ते ते पुण्य पाविजे ॥ १५ ॥ ब्रह्मा  
दीक सुरवरा ॥ वसिष्ठ प्रमुख सर्वरा ॥ सर्वात्मना केल विचारा ॥ मा  
घ घणच नुर्दसी ॥ १६ ॥ उपवास वेक घडे ॥ तरी शतयज्ञाचे फ  
ळ जोडे ॥ रात्रि जागरण सिया पुढे ॥ कलम कोटीत या सम पुण्य  
॥ १७ ॥ सिव नि सि पु त नि वेळ पने ॥ या पुण्याचे महीमान ॥ सम  
ता पावे कवणा उपमेवे ॥ महीमान न ब्रिल्लदकी ॥ १८ ॥ तरी ये  
विषी पुरातन ॥ गौतम गौतम दिवसे प्रगक दुन ॥ परिसारुषी  
हो सावधान ॥ भाग्यनिधान नुही सकळ ॥ १९ ॥ इक्ष्वाकु वौषि सं  
भुन ॥ मित्र सहना में विख्यात ॥ सर्व गुणी लक्षणवंत ॥ अति श्रीमंत धार्म  
का ॥ २० ॥ तया सिपारधी वरी बहु भरा ॥ नीय सावजे वधी आदरी ॥ च  
निधि चरता निशाचरा ॥ शरें कर निचधीये ॥ २१ ॥ आंतर होता

(१)

२

बंधुराक्षसाचा॥देखे<sup>ता</sup> जालवधबधुका॥ लपोनिठे लाजयावृपा  
चा॥ उबगमनिमानुनीया॥ २५॥ मनिराक्षसें विचारीलें॥ माझे  
नियासिनवचेवधीलें॥ नकळतयातें पाहीजेसाधिलें॥ सुउद्ध  
ययाबधुचा॥ २६॥ ऐसें विचारा निमानसी॥ पालटीलें राक्षसत  
नुसी॥ धरिलें मानुसवेशासी॥ रायापासी पातला॥ २७॥ बोलेन म  
नामधुरवाणी॥ त्यामिजांजिनिवाक करणी॥ सास्त्रव्यालोमिठाके  
नी॥ सेवावृत्तिकराव्या॥ २८॥ सती प्रेतरावीषगरका॥ शस्त्राशकी  
लें जैसे दळा॥ दृष्टचिनाची अंतर्का॥ नागभीक्ष्ण अन्नायेसी  
२९॥ अच नागकांडीचारसा॥ मुरची गुळगुळापाकिं नासा॥ नैसाक  
पडवे सीराक्षेसा॥ दासमावे अनुसरला॥ ३०॥ रायें निवेदिलें मात  
वसा॥ पाकुकरितां सुरवे वसे॥ ऐसे कर्मिले की ते कदी वसा॥ अं  
३१०॥ तरे प्रेक्षीराक्षसतो॥ ३१॥

॥ प्रसंग ॥ २ ॥

(9A)

सु

मैंदविप्रयेराधर। पाहे संधीचे सवचेस। तैसा निरंतर निशाचर।  
क्षुद्रपाहसावध। २९॥ तवरायाचि पित्रुतिथि पातली। वसिष्ठासही  
तविप्रमंडळी। सुचिर्मुनमाध्यानकाळी। बालेजाळासंकलु।  
॥ पात्रेंमोडलीतयास। वैसेकाजालीसकळास। सर्वत्रावाटीलेउं  
ज्वरस। नरमोसतेवसिष्ठपात्री। ३१॥ विप्रयेषेंराक्षेसेंवाटुन। के  
लेनिमिश्रोतपळायन। वशिष्ठसेवापोशुन। तवनरमोसपात्रीं  
देखिले। ३२॥ क्रोधेबोलेरासी। आमुचेज्ञानपारीखीसी। पा  
त्रिंवाटीलेनरमोसासी। तरिहचकाहसीमक्षतुं। ३३॥ राजाह  
णेनंकेमाझेकरणे। तवसुखीविचसनिपाहेज्ञानां। राक्षसकर  
णिहेवैरपणे। व्यर्थआपिलेंरायासी। ३४॥ मंगलणेशापनंकेबा  
सयें। भोगीद्वादशवर्षपर्यंत। लाहोनियांराक्षसत। उपरीक्षु  
धहोसील। ३५॥ राजाहणेअपराधेवीण। मजशापाव्याकाय

(10)

कारण॥ मिहीतापिननुसलागेन॥ हणोनिजळेंवजुकीसर  
येली॥३६॥ शापवदावाजवनुपती॥ तवधाविनलीराजमुवती॥  
नामंपतीव्रतामदयंनि॥ जैसिदमयंतिनळाची॥३७॥ शापाचा  
जवकरावाउचार॥ तवश्रीनिधरीलाराजकरा॥ हणोहाकीस्वा  
मीकुळगुरा॥ धराविचारपुधीचा॥३८॥ क्षेत्रियेगुरुचीसेवा  
करणे॥ अपराधनसंगीहीनमधरणे॥ बोलवौशासिळावणे॥ अपा  
पकीतिवाणेजगात॥३९॥ करधरिनेसमईसुंदरी॥ जळउसळ  
लेतेष्यावसरी॥ पडिलेंरायचपांगवरी॥ काळकुष्टतोचढीला  
४०॥ कलमाक्षपादअभिधान॥ रायासिजालेंतेपासुन॥ हेष्यासो  
गुरुशापेंकरुन॥ राजाराक्षसपणपावला॥४१॥ विचरेघोर  
वनंतरी॥ पशुपक्षीनरमांसषाहारी॥ तवयेकेष्यावधरी॥ वी  
प्रपुत्राभायेसिंदेरिविलें॥४२॥ तुतनवराडजालेंहोते॥ दोघे



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com